

शाब्दिका

२०२०
संस्कृतविभागः

एगरा सारदा शशिभूषण कलेज

शाब्दिका

द्वितीया संख्या

२०२०

प्रधान उपदेष्टारौ—ड. दीपक कुमार तामिलिः

ड. जनेशरञ्जन भट्टाचार्यः

विभागीय प्रधानः, संस्कृत विभागः, एगरा सादरा शशिभूषण कलेज

सम्पादकौ—ड. पञ्चाननपण्डा अध्यापक तन्मयसिं च

सदस्याः—अध्यापक तारापद मिश्रः

अध्यापिका अनीता पयड्या

अध्यापिका अन्तरा भट्टाचार्यः

अध्यापक चन्दन दाशअधिकारी



बि.एन.पाब्लिकेशन्

३ श्यामाचरण दे स्ट्रीट

कलिकाता—७३

सूचीपत्र

१. "गीतोपनिषद्" डः विश्वेश्वरपाणिग्राही	२
२. श्रीमद्भगवद्गीतालोके जीवनयापनम् निरूप-माइतिः	१५
३. श्रीमद्भगवद्गीतानुरीत्या इन्दियसंयमचिन्तनम् सुवीर दोलुइ	२३
४. मानवीयमूल्यबोधगठने गीता शोधछात्रः तरणीकुमारपण्डा	२४
५. श्रीमद्भगवद् गीताय प्रतिफलित कर्मयोग चिन्तन— अनिमा साह	३९
६. श्रीमद्भगवद्गीताय कर्मसम्यासयोग— अरिजिता दास	४९
७. श्रीमद्भगवद्गीताय मानव जीवन — देवाशीष दत्त	५५
८. चरित्रगर्ठने श्रीमद्भगवद्गीतार प्रभाव— दीपायिता दास (पयड़ा)	८६
९. गीतार आलोके मानसिक प्रशान्ति— गार्गी हाजरा	९८
१०. गीतानुसारे आत्समर्पण — ड. जगमोहन आचार्य	१०९
११. गीतालोके मनुष्य जीवन — जयसु मण्डल	११२
१२. दैनन्दिन जीवने श्रीमद्भगवद्गीता— ड. जितेन्द्र नाथ दास	१२८
१३. मानवजीवन श्रीमद्भगवद्गीता — काण्टन बारिक	१४०
१४. योगः कर्मसु कौशलम् — मिलन घोड़ाई	१४८
१५. न हि कश्चित् ऋणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्— शुभङ्कर पति	१६१
१६. व्यक्तिचरित्र निर्माणे गीतार उपदेश— शास्त्रनु मण्डल	१९३
१७. श्रीमद्भगवद्गीता ओ मनुष्यजीवन सत्येन शीट	१९८
१८. प्रसङ्ग श्रीमद्भगवद्गीता ओ कर्मयोग— सौरभ नायक	२०५
१९. श्रीमद्भगवद्गीतोकु दिशाय मनोभूमिर् विशेषण — मैत्रेयी जाना	२१६
२०. भागवतचिन्ताई इन्द्रियजयेर महोषध — सुब्रत माना	२३०
२१. प्रसङ्गे गीतार भक्तियोग ओ मनुष्य जीवन— तन्मय कुमार सिं	२३५
२२. गीताय पितृयोग ड. पण्डानन पण्डा	२४९
२३. श्रीमद्भगवद्गीता — जनेशरङ्गन भट्टाचार्य	२५२
२४. धर्मशास्त्रमयीगीता— चन्दन दाश अधिकारी	२९३

গীতানুসারে আত্মসমর্পণ

ড. জগমোহন আচার্য (সহকারী অধ্যাপক)
সংস্কৃত বিভাগ, খড়্গপুর মহাবিদ্যালয়

অহং ভাব বিনাশের কারণ। অহং ভাবকে ত্যাগ না করলে মনে সমর্পণের ভাব জাগবে না। অর্জুন যে কাজ করার জন্য কুরুক্ষেত্রে নেমেছিলেন, তিনি তা না করে বিপরীত কাজ করতে ভেবেছিলেন। শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে বোঝাতে লাগলেন। অর্জুন নিজের স্বজনদেরকে দেখে আত্মীয়তার মোহে যুদ্ধ করতে রাজি নন। এ তাঁর হৃদয়ের দুর্বলতা। কিন্তু এ দুর্বলতা তাঁর করণীয় কার্যের বিপরীত। এ তার কাপুরুষতা। কর্তব্য পালন না করে নিজের স্বজন দেখে ফিরে যাওয়া হচ্ছে পাপ। ধর্মের জন্য সংগ্রাম করতে অর্জুন নেমেছিলেন। আর স্বজনদের দেখে অধর্মের পক্ষ নিয়ে কর্তব্য থেকে সরে যাওয়া কাপুরুষতার পরিচয়। এটা অহং ভাবের পরিচয়। আমি আর আমার মধ্যে সীমিত থাকলে সত্যের প্রতিষ্ঠা হয় না। সমর্পণ ভাব মানুষকে সঠিকমার্গ দেখায়। কি করতে হবে তা জানতে অর্জুন নিজেকে শ্রীকৃষ্ণের কাছে সমর্পণ করেন। অস্থিরমনা অর্জুন শ্রীকৃষ্ণকে জিজ্ঞাসা করলেন, যা আমার কাছে শ্রেয় সেটি নিশ্চিত করে বলুন। অর্জুনের ভাষায়—

কার্পণ্যদোষাপহতস্বভাবঃ পৃচ্ছামি ত্বাং ধর্মসংমূঢ়চেতাঃ।

য়চ্ছ্রেয়ঃ স্যান্নিশ্চিতং ব্রাহ্মি তন্মে শিষ্যস্তেহহং শাধি মাং ত্বাং প্রপন্নম্।।

(গীতা, ২/৭)

অর্জুন রথের রথি হয়ে নিজের অহং ভাব দেখাচ্ছিলেন। অহংকার থাকলে শিষ্য হওয়া সম্ভব নয়। অর্জুন নিজের অহংকার ত্যাগ করে শ্রীকৃষ্ণের শিষ্যত্ব গ্রহণ করেছেন। গুরুর উপদেশানুসারে সমর্পিত হয়ে কাজ করার ভাব যতক্ষণ না জাগে ততক্ষণ অহং যায় না। সমর্পণ ভাবের অন্তিম পরিণতি হল পূর্ণ সমর্পণ। গীতার অষ্টাদশ অধ্যায়ের ‘করিষ্যে বচনং তব (গীতা, ১৮/৭৩), এই কথা থেকে অর্জুনের পূর্ণসমর্পণ অবগত হওয়া যায়।

শরণাগত হলে তাঁকে উদ্ধার করা উচিত। ত্যাগের দ্বারা যা কিছু সমর্পিত হয়, তা নিশ্চয়ই ঈশ্বরের কাছে যায়। সমর্পণ ভক্তি মূলক হতে হবে। লোক